

चलति पुंमाम् BHART. Suppl. 23. तव प्रतिज्ञा चलिता निश्चय R. 4, 32, 22. कौरव वज्रेऽचलितं स्मृतिम् BHĀG. P. 4, 12, 8. ततश्च रम्भा नृत्यतीमाचार्यं तुम्बुरौ स्थिते । चलिताभिनयो (BROCKH.: als sie den Tanz Kālita auführte) दृष्ट्वा जहास स पुत्रवाः ॥ KATHĀS. 17, 20. — 3) *abweichen von, abfallen von, lassen von, untreu werden*; mit dem abl.: न धर्माच्चलते बुद्धिर्मर्यादस्य MBh. 2, 2629. स्वधर्मान् चलन्ति च M. 7, 15. स्वधर्माच्चलितान् JĀG. 1, 360. R. 2, 75, 42. न चैवाप्यं स्थितश्चलति तद्वतः BHĀG. 6, 21. योगाच्चलितमानसः 37. Umgekehrt sagt man auch, dass die Pflicht von Jmd weiche: यस्मान् चलते धर्मः R. 6, 4, 20. द्विजातिचलितो धर्मः 2, 61, 23. चलेद्धि वृत्ताद्धर्मो ऽपि MBh. 1, 2910. — Vgl. चट्, चर.

— caus. 1) चलयति DHĀTUP. 19, 51. P. 1, 3, 87. VOP. 22, 2. a) *in Bewegung versetzen, bewegen*: चलयन्ङ्गुरुचस्तवालकान् (मारुतः) RAGH. 8, 52. तां (श्लोकवनितां) प्राविशत्कपिव्याघ्रस्तत्रनचलयन् शनैः BHATT. 8, 60. चरणौ BHĀG. P. 3, 15, 37. ज्वलति चलितेन्धनो ऽग्निः ÇĀK. 158. — b) *übertr. aus der Ruhe bringen*: यूनां मनश्चलयति प्रसभं नभस्वान् R. 3, 10. — c) *ablenken von, abbringen von*: चारित्र्याच्चाहृदत्तं चलयसि MRĀKṢ. 147, 9. — 2) चालयति a) *in Bewegung versetzen, bewegen, schütteln, zum Wanken bringen, stossen*: चालयन्वसुधो चेमां वलेन चतुरङ्गिणा MBh. 1, 3727. R. 3, 7, 10. 72, 14. BHĀG. P. 3, 1, 43. 6, 9, 14. चालयिष्यामि पर्वतान् R. 4, 43, 12. न चाशक्नुञ्चलयितुं भीमः पुच्छं मरुतकपेः MBh. 3, 11185. प्रवहन्म् MRĀKṢ. 97, 19. चालयानः स वेगेन लताञ्जालान्यनेकशः MBh. 3, 11095. पातयन्पञ्चतालानि चालयामास तांस्तत्रन् HARIV. 3711. चालयते शीर्यम् R. 1, 41, 15. गिरश्चालयति MRĀKṢ. 120, 20. 30, 17. DHĀTAS. 93, 17. स जीवो निरधिष्ठानश्चाल्यते मारुतिश्च ना MBh. 14, 482. चालयत्तमनीकानि R. 6, 73, 20. येनाहम् — चालितः पदा MĀRK. P. 16, 29, 28. — b) *fortbringen, vor sich herreiben, fortreiben, von seinem Platze vertreiben*: गोपाल इव दण्डेन यथा पशुगणान्वने । चालयन् MBh. 1, 5743. चालिताश्च auseinandergesprengt (विल) 7, 222. मुरलोक्तस्यः पुण्याते ऽपि न चाल्यते 13, 3336. चालयामास दीप्तांशुं स्वर्गद्वारात् HARIV. 2697. — c) *aus dem Geleise bringen, in Verwirrung versetzen, aufregen*: दृशो नृणां चालयतो विधातुः BHĀG. P. 3, 1, 42. चालयन्ति स्म तां बुद्धिं वचनैः प्रश्नयोत्तरैः MBh. 12, 4090. (चित्तम्) शमप्राप्तं न चालयेत् VEDĀNTAS. (Allah.) No. 141. — d) *abbringen von*: न चैनं चालयामास धैर्यात्सुधृतनिश्चयम् MBh. 3, 1504. R. 3, 35, 18.

— intens. चञ्चल्यते (vgl. चञ्चल) und चाचल्यते (vgl. अविचाचल fgg.) VOP. 20, 8, 9.

— या caus. *in Bewegung versetzen, von der Stelle rücken*: आचालयेयुः शैलास्ते क्रुद्धाः HARIV. 3036. पवनः स्थानाद्गतान् — आचालयति MBh. 12, 5814. *umrühren*: मधुपर्कम् KAUC. 91.

— उद् *sich entfernen von, sich losmachen von, sich ablösen*: स्थानादनुच्चलन्नपि ÇĀK. 28. नोच्चचालामनात् *erhob sich nicht vom Sitze* BHĀG. P. 6, 7, 8. पण्यगन्धेन काननम् । सा चकाराङ्गरणेण पुष्पोच्चलितवृद्धम् RAGH. 12, 27. शैलोच्चलितव्रणधन HARIV. 2886. *sich aufmachen, aufbrechen, fortgehen* RAGH. 2, 6. 11, 51. KATHĀS. 16, 90. नगरापोदचलम् DAÇAK. in BENF. Chr. 184, 6. चित्रतुराणि पदान्युदचलम् 187, 3. 194, 10. — Vgl. उच्चल.

— समुद् *gemeinschaftlich aufbrechen* DAÇAK. in BENF. Chr. 188, 15.

— परि *sich bewegen, sich rühren*: अपरिचलितगात्रा SĀH. D. 67, 12. — caus. *im Kreise bewegen* MBh. 12, 6870.

— प्र 1) *in Bewegung gerathen, erleben, erzittern*: वीर्वं नृत्येत् । प्रेवं चलेत् । व्यस्येवाह्यौ भीषेत TBr. 2, 3, 9, 9. प्रचाल मही R. 3, 29, 13. 6, 90, 22. मही प्रचलिता चासीत् MBh. 13, 2070. पर्यस्तैर्यूर्णमानैश्च प्रचलद्भिश्च सानुभिः HARIV. 3942. (गृहाणि) प्रचलन्तीव भोरणा MBh. 3, 3109. 3355. 7, 1165. R. 5, 38, 35. BHĀG. P. 1, 14, 19. काननदुमाः वायुवेगप्रचलिताः R. 3, 79, 5. MBh. 3, 2758. प्रचलद्दूर्गम् BHART. 2, 4, v. 1. MRĀKṢ. 84, 17. प्रचलद्वात्र BHĀG. P. 9, 4, 43. प्रचलितदृशा AMAR. 73. MRĀKṢ. 2, 12. प्रचलितकुण्डल 11, 3. अस्मै रोपात्प्रचलिता महानृपतिसागरः MBh. 2, 1420. — 2) *sich von der Stelle bewegen, sich in Bewegung setzen, sich fortbewegen*: यथा-म्भसा प्रचलिता तर्वा ऽपि चला इव BHĀG. P. 7, 2, 23. यदा स प्रचलितुं न शक्नोति PĀNĀT. 87, 17. 226, 3. कुमुतया पद्मेकमपि प्रचलितुं न शक्ताः 69, 16. प्रचलिताश्चैन (रथेन) MBh. 7, 544. प्रचचालासनात् *er sprang vom Sitze auf* (WEST.: *decidere, Bopp: cadere*) R. ed. Ser. (steht uns nicht zu Gebote) 1, 18, 23. प्रचलित *vom Platze bewegt* SUÇR. 1, 97, 15. दोषाः प्रचलिताः (vgl. u. चल) स्थानात् 2, 189, 9. — 3) *aufbrechen, sich auf den Weg machen, fortgehen*: यदा चैन्द्राः पुर्याः प्रचलते BHĀG. P. 5, 21, 10. पुरमुद्दिश्य प्रचलितः PĀNĀT. 104, 14. 172, 8, 9. 243, 1. तं प्रति प्रचलितौ 219, 16. तत्सरः प्रचलितः 115, 5. HIT. 46, 14. 60, 7. VET. 4, 14. निजगमगमर्गे प्रचलितः 22, 1. 16, 2. (तेन) पावन्मार्गे प्रचलितम् 33, 2. (घ्रादित्यस्य) राशीनामभिवर्णं प्रचलितं (nom. act.) चाप्रदन्तिषाम् BHĀG. P. 5, 22, 1. — 4) *in Verwirrung —, in Aufregung gerathen*: दृष्टिः प्रचलिता वीर हृदयं दीर्यतीव मे MBh. 4, 1959. मा स्म ते ब्राह्मणं दृष्ट्वा धनस्यं प्रचलेन्मनः 12, 2736. मन्युप्रचलितेन्द्रियः BHĀG. P. 3, 18, 14. — 5) *abweichen von, abfallen von*: प्रचलति न वै धर्मात् MBh. 3, 11249. — caus. 1) *प्रचलयति bewegen*: अ-ल्लवहारीं प्रचलयन् (मारुतः) AMAR. 58. — 2) *प्रचा<sup>o</sup> a) erzittern machen*: लङ्का नदिः प्रचालयन् R. 5, 38, 34. — b) *umrühren*: त्वं दार्वो गृहीत्वा तान् (मत्स्यान्) प्रचालय PĀNĀT. 262, 20, 21.

— संप्र, partic. संप्रचालित *heftig bebend u. s. w.* VJUP. 80.

— वि 1) *sich hinundherbewegen, schwanken*: व्यचालोद्भस्तो पतिः BHATT. 13, 70. KATHĀS. 12, 19. स गृहीतो नखैस्तीक्ष्णैर्विचचाल समततः R. 3, 57, 23. — 2) *sich von der Stelle bewegen, sich entfernen*: यदा न विचचाल तन् (यानयात्रम्) VID. 227. तस्मात्स्थानान्न व्यचलत् HARIV. 4113. ARĀ. 4, 40. (प्रूलम्) ख आपतत्तद्विचलद्भोक्तवत् BHĀG. P. 6, 12, 3. न शक्नो ऽस्मि पदाद्विचलितुं पद्म् *einen Schritt vom Platze mich rühren* MBh. 3, 2614. 12167. दिशमनु AV. 15, 2, 1. 6, 1. 9, 1. 14, 1. — 3) *abfallen, herunterfallen*: विचलति पत्रे Gīt. 5, 10. KATHĀS. 6, 112. — 4) *aus dem Geleise kommen, in Verwirrung gerathen, zu Schanden werden*: मध्याह्ने वीक्षसे ऽर्के न तव सक्तस्य विचलिता दृष्टिः *wird nicht geblendet* MRĀKṢ. 147, 7. मनः प्रचलितम् HARIV. 9948. मत्सत्यं विचलेद्यदि MBh. 2, 2548. — 5) *abweichen von, lassen von*: धर्माद्विचलति R. 5, 81, 36. 2, 39, 28. धर्माद्विचलितः 5, 84, 10. M. 7, 28. JĀG. 1, 357. न सत्याद्विचलित्यामि MBh. 1, 7774. — caus. विचा<sup>o</sup> 1) *in Bewegung versetzen, losrütteln, losmachen*: विचालयेयुः शैलेन्द्रान् R. 1, 16, 23. भूधरगान्विचालयन् MBh. 1, 1336. शल्यम् SUÇR. 1, 101, 10. — 2) *Jmd aus seiner Ruhe bringen, aufregen*: तानकृत्स्नाविदो मन्दाङ्कृत्स्नविन्न विचालयेत् BHĀG. 3, 29. न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते 6, 22. 14, 23. R. 5, 32, 37. दुःखशोकमयैर्न विचाल्यति MBh. 14, 559. 1, 6155. — 3) *ablenken von, abbringen von*: निश्चयात्र विचाल्यते MBh. 3, 15141. योगाद्विचालितः BHĀG. P. 9, 8, 15. — 4) *zu Schanden ma-*